522 (P)
H (57)

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1383/10/71
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 522

19.1

Congress Ki Dhum NO 16

* वन्देमातरम् *

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
29 FEB. 1932
Reg. No.........

प्रकाशकः— ठाकुर गंगाधर

प्रथमवार] चौक लखनऊ। [मूल्य)॥

Printed by D. P. Tewari,
Printer and Proprietor Bharat Bhooshan Press,
LUCKNOW 1931.

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 522
Date 13.12.71
GOVT. OF INDIA
891.431
C76Co

॥ बन्देमातरम् ॥

कांग्रेस की धूम

मिस्टर चर्चिल का प्रलाप

किसकी बुलंद आवाज़ ने, भारत को अब जगा दिया ?
सोया पड़ा था बेखबर, किसने इसे उठा दिया ?
गुलामी में मेरी था फँसा, चंगुल में मेरे था कसा।
रस्ता इसे आज़ादी का, गांधी ने अब बता दिया॥
क्या चैन से गुज़रती थी, ह्विस्की शराब ढलती थी।
फ़ाक़ेकशी के दर्जे तक, हमने इसे पहुँचा दिया॥
कपड़ा बिलाती छोड़कर, खद्दर से नाता जोड़कर।
लंकाशायर को एकदम, मिलकरके बस रुला दिया॥
करके जबर भी हारे हम, हलचल हुई ज़रा न कम।
चिढ़कर दमन से और भी, लंदन को बस हिला दिया॥

(उत्तर) आज़ादी का दौर

ऐ फ़िरंगी ! हिंद में आया है आज़ादी का दौर।
ख़त्म होने को है अब भारत में बरबादी का दौर॥
हो गए हैं कान, बातों में न आएँगे तेरी।
चल चुका चलना था जबतक तेरी उस्तादी का दौर॥
हिंद में आसार पैदा हो चले हैं अम्न के।
मिट गया मशरिक़ से तेरी फ़ितना ईजादी का दौर॥

देख, क्या कुछ कर रहा है, बेनवा "बाग़ी फ़क़ीर" ।
इसकी हर जुम्बिश से पैदा है इक आज़ादी का दौर ॥
पंजसाला अहद था इरविन का कैसा जांगुदाज़ ।
आर्डीनेंसों के जाल और उनकी सैयादी का दौर ॥
ऐ विलिंग्डन ! सोच ले पहला-सा भारत अब नहीं ।
इस वतन में अब है क़ौमीयत की शहज़ादी का दौर ॥
आओ मैदाने-अमल में बांधकर "हिंदी" कमर ।
हो चुका नग़मा-सुराई नुक़्ता-ईजादी का दौर ॥

दिल की फ़रियाद

सख़्त पछताओगे ऐ हमको सतानेवालो ।
तोप बंदूक निहत्थों पै चलानेवालो ॥
वादा क्यों झूठा किया था जो न देना था स्वराज ।
बोलो ऐ ख़ौफ़े-ख़ुदा दिल से भुलानेवालो ॥
ग़नमशीनों को तो हैं ढाल हमारे सीने ।
सुन लो ऐ मौत की धमकी से डरानेवालो ॥
तुम भी दुख पाओगे और चैन न पाओगे कभी ।
ऐ हमारे दिले-मुज़तर के दुखाने वालो ॥
आज रोते हमें तुम देख के हम पर न हँसो ।
तुम भी कल रोओगे ऐ हमको रुलाने वालो ॥
क्या कभी रंग न लाएगा ये ख़ूने नाहक़ ।
ऐ हमारा लहू बेकार बहानेवालो ॥
पेट भरकर हमें मिलता नहीं जौ का टुकड़ा ।
ऐ बटर केक मटन चाप उड़ानेवालो ॥
जी हुज़ूरीयो किधर ध्यान है ? मेरी भी सुनो ।
हाकिमे-वक़्त को सर अपना झुकानेवालो ॥

हाय ! कैसी तुम्हें गैरों की गुलामी भाई।
ऐ कभी भाइयों के काम न आनेवालो ॥
अपने ही भाइयों पर आप चलाते हो छुरी।
क्या तुम इन्सान हो ? इन्सानों के खानेवालो ॥
अपना हक मांगने पर हमको बनाया मुजरिम।
तुमने ऐ हाकिमो मौजूदा ज़मानेवालो ॥
वाह ! सदआफ़रीं क्या कहने तुम्हारे, शाबश।
बेख़ताओं को गिरफ्तार करानेवालो ॥
अजब इस झूठ के फ़न में तुम्हें हासिल है कमाल।
वाह ! सच्चाई के नक्कारे बजानेवालो ॥
ज़ालिमों के हैं मुलाजिम भी खुदा के मुलज़िम।
सुन लो सरकारी नमकख़्वार कहानेवालो ॥
जब ज़रा हिन्दू-मुसलमानों में होता है सुलूक।
तुम लड़ा देते हो आपस में लड़ानेवालो ॥
खूब दिन-रात बस अब रिशवतें खाए जाओ।
डर हो किसका है तुम्हें, पेट बढ़ानेवालो ॥
ज़िम्मए- अम्नो-अमां है के रिआया का तमाम।
झूठे तुम क्यों बने बतलाओ तो थानेवालो ॥
खाके चोटें जो गिरा होके जमीं पै बेहोश।
लाठियाँ गश में पड़ों को भी लगानेवालो ॥
यह तो बतलाओ कि तुम आप जियोगे कबतक।
ऐ निशाना हमें गोली का बनाने वालो ॥
तुम करो जाके शुरू इनकी खुदा से फरियाद।
दाद देगा वही ऐ गोलियां खानेवालो ॥
हैफ़। बेजुर्मो-ख़ता है बद मुसीबत तुम पर।

सब दे तुमको खुदा जेल के जानेवालो ॥
हम गरीबों की कमाई की ही दौलत है यह ।
तुमने जो पाई है ऐ माल-खज़ानेवालो ॥
जोश यह वह है जो हरगिज़ नहीं दबनेवाला ।
हक़ की आवाज़ को बातिल से दबानेवालो ॥
जिस कदर हो सके, हाँ, खूब जलाए जाओ ।
बिजलियाँ हम पै शबो-रोज़ गिरानेवालो ॥
क्या हमें बच्चा समझते हो, जो बहलाते हो ।
साफ़ इनकार करो झूठे बहानेवालो ॥
फिर भी इन्साफ़ का दुनिया में है दावा तुमको ।
शर्म आती नहीं ऐ ज़ुल्म के ढानेवालो ॥
ज़ुल्म भी करते हो, फ़रियाद से भी रोकते हो ।
कोई हद भी है अरे ! हमको मिटानेवालो ॥
नींद सुख की हमें सोने कभी दोगे कि नहीं ।
क्योंजी सोए हुये फ़ितनों के जगानेवालो ॥
देखना तर्ज़े-सितम बाक़ी न रह जाय कोई ।
मुल्क की दुश्मनी का बीड़ा उठानेवालो ॥
क्या ये दो दफ़े मिला देंगे खुदा से तुमको ।
ऐ खिताबों के गवर्मेंट से पानेवालो ॥
दोगे कब 'कमतरे नाचीज़' की फ़रियाद को दाद ।
ऐ ग़रीबों का कभी ध्यान न लानेवालो ॥

माँगिये अब ख़ैर साहब कोट की पतलून की

चल नहीं सकती यहाँ पर अब तुम्हारी दून की।
माँगिये अब ख़ैर साहब कोट की पतलून की॥
देखते रहना पड़े कमख्वाब ही बस ख्वाब आप।
हो मयस्सर एक भी लच्छी न तुमको ऊन की॥
केक, बिस्कुट और डबल रोटी उड़ालो कूद कूद।
फ़िक्र बच्चों को पड़ेगी एक चुटकी चून की॥

अगर पूरी गजल पढ़ना हो तो वीरों की गर्जना में पढ़िये

मूल्य -)

किसान भाइयों की दशा

कभी न सोचे नगर के भाई, किसान भाई का हाल क्या है?
क्यों सूखा तनहै, उदास मनहै, ये उसके मन में मलाल क्या है?
ये मुल्की दौलत व क़ौमी इज़्ज़त का पूरा दारोमदार जिसपर।
वही मुसीबत में मुब्तिला है, तो दुःख होना मोहाल क्या है?
हमारे सुख के लिये हमेशा, जो सख्त मिहनत से करता खेती।
वह अन्नदाता हमारा भाई, ये करता हमसे सवाल क्या है?

फ़सल न अच्छी हुई है पैदा, बज़रा-गल्ला गिरा है बिलकुल।
लगान भारी अदा हो कैसे, किया किसी ने खयाल क्या है?
बेगार, नज़राना औ ज़िमीदारी अत्याचारों से नाकों दम है।
हुई जो थोड़ी-सी छूट भी है, तो उससे होती संभाल क्या है?
महाजनों से चुसा है ड्योढ़ी, उगाही दे-देके दस के बारह।
क़रज़ के बोझे से मर रहा है, कभी जो हुमसे मजाल क्या है?

बिलखते भूखों से बाल बच्चे, उधर है सख्ती बयाँ से बाहर।
है सख्त मुश्किल में जान उसकी, मुहाले इससे सवाल क्या है?
ये ऊँचे बँगले महल व मोटर, हैं जिसके धन से उसी को ठोकर,
ग़ज़ब सितम यह क़हर है कैसा, उसीको धौं पर बवाल क्या है?
जहां से इन्साफ उठ गया है, न धर्म ही है न कुछ दया है।
है मार सबलों की दुर्बलों पर, समय ये आया कराल क्या है?

जो चारों फल देता देवता-सा, परोपकारी है कल्पतरु-सा।
फ़लक! ये अंधेर उसपै कैसा बतादे इसकी मिसाल क्या है?
रहम करो सब तरस करो सब, किसान भाई के दर्द दुख पर।
"प्रकाश उसपर रहम करोगे, तो धर्म ही है, कमाल क्या है?

हाय बाप रे !

खद्दर से नाक में दम

कोई विदेशी चीज में खर्चें नहीं छदाम ।
गान्धी वह चर्खे खद्दर ने सारा बिगाड़ा काम ॥
खद्दर ही बिकता देखते हम सब जगह तमाम ।
जिससे हमारी नाक में हाय होगया जुकाम ॥